14.04 hrs.

RE: INTERNATIONAL WOMEN'S DAY

SHRIMATI MARGARET ALVA (CANARA): Today is International Women's Day. On behalf of the Members of this august House I wish to greet, through you, Sir, not only our sisters in the country but also women around the world.

Sir, for ages women have been contributing to the development of society, particularly in our country. Women have had great achievements to their credit. Yet, despite Constitutional guarantees, legislation and many social reform movements women are discriminated against. They have been left behind whether it be in the case of literacy, inheritance of property or powers and positions in society, family or in Government.

SHRI G.M. BANATWALLA (PONNANI): Are we called to form the Government?

SHRIMATI MARGARET ALVA:: Let me come to that. कभी तो महिलाओं को बोलने का मौका दीजिए। (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Banatwalla, extraneous matters may be avoided, please.

SHRIMATI MARGARET ALVA : I would like to say that there is a great gap between the *de jure* and *de facto* status of women in our country. Legally we have rights, but if we look at it in real life, woman realises what discrimination exists. I do not wish to come with a litany of our grievances today. We come on this day to say that women need to be recognised in their families, in society, in all fields of work and particularly, in the field of decision making.

We were the first in the world to experiment with reservation for women in our local bodies, the Panchayat. This has brought ten lakh women into elected bodies around the country and empowered them to participate in the political decision making processes. This is a great contribution of Rajivji and it was in his memory that this was actually passed in 1992 when we came back to power under Shri P.V. Narasimha Rao. These women have achieved a great deal of, if I may say so, empowerment. I do not say all of them have been perfect. But I think they have shown that given an opportunity, women can contribute and achieve something.

The Women's Reservation Bill is still pending before Parliament. I do realise that most of you get nervous the moment we mention it. But I would like to say that every change and every movement always creates a sense of insecurity. But I believe, hope and pray particularly as a tribute to our late sister Geetaji who struggled so much for this Bill that on this International Women's Day we could make a commitment that in one form or the other form we would bring women into decision making processes in our political life.

We have seen the noise and heat in this House over the last few days. If there had been more women, I think there would have been less noise and less heat generated. I must also say that while we are talking about women's right to participate in political decision-making bodies, it is unfortunate that the former woman Chief Minister of the State was not allowed to come back and take oath in Bihar. But we do hope that better sense will prevail and that for the future women will find a place in all fields of public life. Thank you very much.

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : उस महिला को लाने के लिए अपनी पार्टी बचा लीजिए। (व्यवधान)

प्रो. रीता वर्मा (धनबाद) : आप कब तक महिलाओं का मुंह बंद करेंगे। (व्यवधान) बोलने दीजिए। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप इधर देखकर बात कीजिए।

(व्यवधान)

प्रो. रीता वर्मा (धनबाद) : आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है और मैं सभी को इस की शुभकामना देती हूं। हम चाहते हैं कि पूरा सदन पूरे भारतवर्ष की महिलाओं को अपनी शुभकामना

दे और यह संदेश दे कि हम आपके साथ हैं और आपकी बढ़ोत्तरी के लिए मिलकर कदम उठाएंगे। यह वक्त छोटी-मोटी राजनैतिक बहस और पैटी स्नाइपिंग का नहीं है। इसलिए मैं अपनी बात को पैटी स्नाइपिंग और पैटी पौलीटिकिंग से दूर ले जाकर कुछ बातें कहना चाहूंगी। जब भी हम महिलाओं के लिए आरक्षण की बातें करते हैं तो या तो मूड बहुत आक्रामक हो जाता है या बहुत हंसी-मजाक का हो जाता है। मैं मानती हूं कि महिलाओं को शक्ति-सम्पन्न बनाना खास तौर से जबकि हमारी सरकार ने यह निर्णय किया है कि इस वर्ष को हम महिला अधिकारिता वर्ष के रूप में मनाएं।

मैं अपने पुरुष सहयोगियों से यह अपील करूंगी कि इस मसले को न वे आक्रामक ऐंगल से देखें, न आक्रामक रुख से देखें। न वे इसको हंसी मजाक का विषय बनायें। हम भी आपकी तरह इंसान हैं और हम आपके विरुद्ध नहीं हैं। मैं आपके मन से यह बात निकाल देना चाहती हूं कि हम आपके विरुद्ध नहीं हैं। आप तो हमारे सहयोगी हैं, हमारे सहचर हैं और हम सब साथ-साथ मिलकर राष्ट्र निर्माण का काम करेंगे। हम किसी भी तरह से आपके अधिकारों में कटौती नहीं चाहते। हम सिर्फ आपसे अपना अधिकार मांगते हैं और इसलिए मैं पूरे सदन से यह अपील करूंगी कि छोटी-मोटी राजनीतिक प्रतिद्वन्दिता को भूल जायें और महिलाओं को उनका अधिकार, 33 प्रतिशत आरक्षण देने का जो मसला है, इस पर गम्भीरतापूर्वक सकारात्मक कदम उठायें। यहां पर मैं ...(व्यवधान) कृपा करके थोड़ा धैर्य रखें।

...(Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER : Let me give priority to woman Members.

प्रो. रीता वर्मा (धनबाद) : जरा कृपा करके धैर्यपूर्वक सुनें, मुझे बहुत ज्यादा नहीं कहना है।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Order please. Shri Buta Singh, please hear her. I am giving preference to lady Members.

प्रो. रीता वर्मा : अब फिर हंसी-मजाक की बातें मत कीजिए, सीरियस बातें कीजिए।

माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं यहां पर आपके द्वारा यह भी अपील करना चाहूंगी कि कई बार ऐसी बातें उठती हैं कि इतनी महिलाएं कहां से आयेंगी। जहां से उतना पुरुष आते हैं, वहीं से इतनी महिलाएं भी आयेंगी, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। कई बार मैं यह भी देखती हैं, खास तौर से मैं कहूंगी कि हमारे जो पत्रकार मित्रगण हैं, मीडिया में भी रिपोर्ट्स आती हैं कि जो महिला सरपंच है, वह अपने घर को गोबर से लीप रही थी और अपने बच्चे को खाना खिला रही थी। कोई भी महिला अपने घर को गोबर से

लीपने में तिरस्कृत नहीं होती, उससे उसका मान बढ़ता है। अपने बच्चे को यदि वह गोद में लेकर खाना खिला रही है तो यह बात कहीं से इस बात को नहीं दर्शाती कि उसके पास बुद्धि की कमी है। यह उसका एक ममतापूर्ण कर्तव्य है, जिसको वह सारी चुनौतियों के बावजूद निभाती है। इसलिए मैं यह कहूंगी कि इस की रिपोर्ट्स कि जो महिला सरपंच हैं, उनके पति ही राज चलाते हैं। आप भी बहुत बड़े पद पर हैं, हम सब बड़े पदों पर हैं, हम सब के पास सलाहकारों की पूरी एक टीम होती है। उस बेचारी महिला सरपंच का पति यदि उसके सलाहकार के रूप में काम करता है तो यह इसे नहीं दिखाता, जब हमारे पास सलाहकारों की एक टीम है तो यह इसे नहीं दिखाता कि हमारे पास बुद्धि की कमी है, तो इस बात के लिए उस महिला का क्यों मजाक उड़ाया जाये कि उस महिला का पति या कोई भी उसके काम में सलाह देता है तो यह महिला की बुद्धि और विवेक पर हम छोड़ दें कि वे उनकी सलाहों को मानती हैं या नहीं मानती हैं। मैं यह भी कहूंगी कि फर्स्ट जैनरेशन, जिसको पावर मिलती है, शायद वह हमारी अपेक्षा के अनुरूप प्रदर्शन न कर सकें, लेकिन उसके बाद की जो पीढ़ी आयेगी, वह निश्चित रूप से उससे कहीं ज्यादा अच्छा प्रदर्शन करती है। इसलिए मैं पूरे सदन से यह अपील करूंगी क अब समय आ गया है, इसलिए आज आप सब इस बात की हमारे साथ एकजुटता दिखायें कि इसी सत्र में आप महिला रिजर्वेशन बिल को पास करेंगे। आप हमारा ख्याल रखें, हम आपका ख्याल रखेंगी। ...(व्यवधान)

श्रीमती कान्ति सिंह (विक्रमगंज) : उपाध्यक्ष महोदय, आज अन्तर्राट्रीय महिला दिवस पर आपने मुझे कुछ बोलने का मौका दियाहै, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं।

साथ ही आज अन्तर्राट्रीय महिला दिवस पर देश की सारी महिलाओं को शुभकामनाएं देती हूं। आज स्वर्गीय गीता मुखर्जी, जो हमेशा गरीबों के लिए लड़ाई लड़ती रहीं, महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ती रहीं, उन्हें हम श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। आज हम महिलाओं के बारे में सदन में बात कर रहे हैं। जब रिजर्वेशन की बात आती है तो मात्र 33 प्रतिशत आरक्षण देने की बात कही जाती है। हम कहतेहैं कि हमारी आबादी आधी है और 33 प्रतिशत हम आरक्षणदेने की बात करते हैं तो मात्र 15 प्रतिशत महिलाओं का आरक्षण, चाहे विधान सभा में हो या लोक सभा में हो, हम आरक्षण देने की बात करते हैं।

हम यह भूल जाते हैं कि जो गांव में रहने वाली महिला है, वह किस तरह से अपना जीवन-बसर करती है, किस तरह से अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है। दिन भर खेती-मजदूरी करती है और अपनी पीठ पर जलावन की लकड़ियां लादकर उन्हें बेचकर अपने बच्चों की परवरिश करती है। ऐसे हालात में हम 15 प्रतिशत की आबादी को आरक्षण देने की बात करें, तो कहां तक इन महिलाओं को न्याय देने की बात कर पाएंगे। बिहार की पूर्व मुख्य मंत्री श्रीमती राबड़ी देवी थीं। उनको जबर्दस्ती यहां की केन्द्र सरकार के मुखिया अटल जी और आडवाणी जी के द्वारा वहां के गवर्नर पर दबाव डालकर मुख्य मंत्री के पद पर दुबारा नहीं बैठने दिया। इस तरह से वहां लोकतंत्र की हत्या करके, संविधान की हत्या करते हुए कम संख्या में जो गुट था उसके व्यक्ति को मुख्य मंत्री के पद पर बिठा दिया गया। इसके बावजूद भी आप महिलाओं की बात यहां कर रहे हैं। एक महिला मुख्य मंत्री जो बिहार में थी, जो पूरे समाज का प्रतिनिधित्व करती थी, आधी आबादी से कम पढ़े-लिखे जो लोग हैं, जो गांवों में बसर करने वाली महिलाएं हैं, जो सामाजिक न्याय के तहत आने वाली महिलाएं हैं, ऐसी महिलाओं में से एक राबड़ी देवी को मुख्य मंत्री नहीं बनने दिया और मनमाने तरीके से अपना मुख्य मंत्री थोपने का काम इन्होंने किया है, यह सबको पता है। वहां के गवर्नर पर दबाव डालकर, जबकि हम बहुमत में थे, हमारा दल सबसे बड़ा था, उसके बावजूद भी हमारी नेता को मुख्य मंत्री नहीं बनने दिया। ऐसे हालात में ये लोग वहां के विधायकों को खरीदने की खुली छूट दे रहे हैं। वहां के विधायकों का अपहरण किया जा रहा है..(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shrimati Kanti Singh, please confine your speech to the International Women's Day. Do not make it a controversial issue now. Try to

conclude now.

श्रीमती कान्ति सिंह : मैं महिलाओं की ही बात कर रही हूं। आप सच्चाई को सुनिए। उपाध्यक्ष महोदय, वहां पर क्रिमिनल्स के द्वारा विधायकों पर दबाव डाला जा रहा है कि हमारे पक्ष में मत नहीं डालोगे तो हम तुम्हारे परिवार के साथ गलत तरीके से पेश आएंगे। ऐसे हालात में वहां के विधायक भयभीत हैं। इसलिए मैं सारे सदस्यों से यह मांग करती हूं कि इस तरह का दबाव हमारे विधायकों पर क्रिमिनल्स के द्वारा नहीं डाला जाए। वहां एक-एक करोड़ रुपए में हमारे विधायकों को खरीदने की साजिश हो रही है। एक महिला के खिलाफ ये लोग साजिश कर रहे हैं। ये नहीं चाहते कि बिहार में राबड़ी देवी पुनः मुख्य मंत्री बनें।

उपाध्यक्ष महोदय : बिहार इश्यू पर मत जाएं, अब आप समाप्त करें।

श्रीमती कान्ति सिंह : ये लोग महिलाओं को अधिकार देने की बात कर रहे हैं, मैं उसी बिन्पदु पर

बोल रही हूं। मैं पूरे सदन से अपील करती हूं कि हमारी महिला सदस्य को यानि राबडी देवी को बिहार की से वहां मुख्य मंत्री बनाया जाए, क्योंकि जनता ने उन्हें सबसे ज्यादा सीटें देकर विधान सभा में भेजा है।

PROF. A.K. PREMAJAM (BADAGARA): Respected Mr. Deputy-Speaker, Sir, I thank you very much for giving this opportunity. Today is March 8, the first International Women's Day of this century and this new millennium. But I feel that there is not much change between the last International Women's Day and this International Women's Day because the issues concerning women are still pending with us and no initiative is taken by this Government to solve the problems of the women of this country.

We, the women, are united cutting across all the barriers of caste, creed, religion and political barriers. We stand

united for the cause of women and also through that the cause of our nation. The great comrade Lenin has said that the developmental degree of a nation is judged by the status of women of the nation. If that is the principle by which we are going to judge India, then we are far behind. I think we are still in the feudal age because in certain parts of the country, at the Governmental level, steps are being taken to lag or drag the women far back into the feudal society.

...(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Here you are not allowing them even to speak.

...(*Interruptions*)

PROF. A.K. PREMAJAM : This kind of intolerance is going on.

As far as reservation of women in all decision-making bodies is concerned and if we go by the present statistics, all will agree that we do not have even ten per cent of representation for women in Lok Sabha, Rajya Sabha and also in the State Assemblies. Here, we have only 49 women Members, that means, it is less than ten per cent of the total 543 Members. The total population is one hundred crore. Actually out of that women are more than half, that is, more than 50 crore. Still when we ask for 33 per cent of reservation, not as a final solution for the problem but only as a starting point, the Government does not show any political will. If the present Government at the Centre has any political will - which I hope it will start developing - then of course, this problem of giving 33 per cent reservation to women can be easily solved because everybody knows the number game, that is, as to how many Members the leading ruling party, the BJP have; as to how many Members the leading Opposition party, the Congress have; and as to how many Members the Left Parties have. If all these are put together, definitely there will be more than two-thirds of the majority. We can easily manage the majority. The only matter which is lacking is the strong political will on the part of the Central Government, which is led by the BJP.

As far as the women's problems are concerned, as per the National Sample Survey and as per the UN Report - India had opened up to the open market and liberalisation of economic policy - India has seven crore more people who have become poverty stricken and if that statistics is taken as the basis for anything to be judged, more women have become poorer and more children are also starving for their basic necessities.

Food security actually is a human right. Unless there is food security, how can we have the right to live? Here, this particular Central Government during the present Budget had cut down all subsidies on food. This measure of the Government alone will make the women poorer and women subject to very grave poverty and this has to be solved. Unless this is solved, there will not be any development in the nation. Unless this problem is solved, you will not be able to take the nation into this new millennium, which everybody is boasting of.

Ever since the new economic policy has been started, seven crore more people have become poorer. This is the statistics, not by me, but it is a National Sample Survey statistics and also of the UN Report.

Another factor which I want to bring before you is that if you take the total workforce in this country, women make up two-thirds of it. But how much do they earn? They actually earn only one-third of the total income and the property owned is only one-hundredth of the total property. This is the condition of women in this country. And we boast of the new century and the new millennium. Where are we going to take our nation if this is the way we are going to develop our country?

I conclude by saying that democracy had been massacred and thereby actually the right of women had been denigrated. I make reference to Shrimati Rabri Devi. The verdict of the people had been shattered to the ground. It is a shameful thing.

I also request the Government that the best homage we can pay to our late Geeta Mukherjee is actually by passing the Women's Reservation Bill. I have told earlier that it is only the starting point, it is not a solution. At least we must make a start in this new century and new millennium and on this day I hope the Government will show the political and the mental strength to see that this Bill is passed during the Budget Session.

(ends)

डा. गिरिजा व्यास (उदयपुर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सम्पूर्ण सदन, देश और विश्व को महिला दिवस के इस अवसर पर संपूर्ण महिलाओं की तरफ से बधाई और गीता जी जो इस आवाज को उठाती रहीं, उनको हम सब की श्रद्धांजलि। बहुत समय से पिछड़ी और अपने आप में कमजोर महिलाएं अब जागी हैं, इसलिए मैं एक शेर के साथ शुरु करूंगी :-

"बंद होठों का था सबब कोई, वक्त आया है हम भी बोलेंगे। "

इसलिए खुराना साहब, अभी आप जो उबासियां ले रहे थे उससे जागने की जरूरत है। आजादी के पहले और बाद में लगातार महिलाओं के अधिकारों में वृद्धि हुई है। हरिजन में 1920 में महात्मा गांधी ने लिखा था कि आजादी का अर्थ निरर्थक होगा, प्रजातंत्र का कोई मायना नहीं यदि पहली और आखिरी पंक्ति में खड़े व्यक्ति को एक सा अधिकार न मिले। लेकिन महिलाएं तो इस पंक्ति से भी बाहर थीं और उसी वक्त से महात्मा गांधी जी ने आह्वान किया कि महिलाओं को आजादी की लड़ाई में भाग लेना चाहिए। जब संविधान बना और हमें पूरे अधिकार मिले तो उसके बाद पंचवर्षीय योजनाओं का दौर शुरू हुआ, कभी महिला कल्याण के रूप में, कभी महिला अधिकारों के रूप में, कभी महिला जागृति के रूप में। नौवीं पंचवर्षीय योजना तक हमने अपने आयामों को छूआ है लेकिन गांधी जी जैसी संवेदनशीलता फिर से कहीं उजागर हुई तो वह राजीव गांधी जी में उजागर हुई थी और उन्होंने उस वक्त एक सोच दी कि राजनैतिक क्षेत्र में भी और निर्णय लेने के क्षेत्र में भी यदि महिलाओं को अधिकार नहीं दिया जाता तो आजादी अधूरी रहेगी।

आज मैं संपूर्ण सदन को जिसमें पुरुषों की संख्या अधिक है उनको विशेष तौर से धन्यवाद देना चाहती हूं कि हम लोग तब केवल 6 प्रतिशत थे लेकिन पंचायत और नगरपालिकाओं और नगर-परिदों का बिल अंतत: पास हुआ और हम नयी दिशा में बढ़े। आज हम जब 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं उस वक्त मुझे एक प्रश्न बार-बार सालता है जो इस बार 15 अगस्त के अवसर पर जब झंडारोहण के बाद मैं नीचे आ रही थी तब एक महिला एक बच्चे को गोद में लिये और एक बच्ची का हाथ पकड़े हुए थी और जब उसे मिठाई दी गयी कि यह स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आपको मिठाई दी जाती है तो उसने अचकचाकर मेरी तरफ देखा कि स्वतंत्रता के क्या मायने हैं। क्या मेरा बच्चा इसी तरह से टोकरे में रहेगा, क्या मेरी बच्ची पढ़ने नहीं जायेगी और क्या मेरा बच्चा जो मेरी गोद में रखा हुआ है, उसे मैं स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं दे सकूंगी। आजादी के इतने वर्षों के बाद भी आज भी गांव की महिला पांच और छ: मील से पानी लेकर आती है तो यह प्रश्न बार-बार सालता है कि आजादी का अर्थ क्या यही है?

इतने वर्षों के बाद जो कांग्रेसी सरकार ने कोशिश की और अपनी विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा महिलाओं को जो अधिकार दिये, आज वक्त है कि उन सभी अधिकारों पर विचार करें और महिलाओं को और अधिक अधिकार देने की कोशिश करें। सरकार ने इस बार भी दूसरी सरकारों की तरह 20 प्रतिशत वृद्धि की है और महिलाओं की शिक्षा पर उन्होंने कोशिश की है कि महिलाओं तक शिक्षा पहुंचे लेकिन उस पर गंभीरता से विचार होना चाहिए।

उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से सदन से निवेदन करना चाहती हूं कि वे महिलाओं के मसलों को राजनीति से ऊपर उठकर देखें। हमें शिक्षा की जरुरत है, हमें अब नौकरियों में उतना वेतन मिलने लगा है जो पुरुषों को मिलता है। लेकिन आज भी असंगठित क्षेत्रों में महिलाओं और पुरूषों के वेतन के बीच की जो विसंगति है उसको दूर करने की जरूरत है। हमें अपना और अपने बच्चों का स्वास्थ्य चाहिए। आगामी वर्ष में जो यू.एन.ओ. ने निर्धारित किया है कि वह वर्ष शांति का वर्ष होगा, उस वर्ष में भी हम अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना चाहते हैं। एक महिला जो एक मां भी होती है और उसका घर जो उसका मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा और गिरजाघर है उसमें वह सुबह से शाम तक अपने समस्त परिवार के सुख की कामना करती है। वह कभी नहीं चाहती कि उसकी कोख उजड़े, उसकी मांग का सिंदूर उजड़े या उसके हाथ की राखी उसके हाथ में ही रह जाये। वह कभी भी कल्पना नहीं कर सकती कि साम्प्रदायिक दंगों के द्वारा या युद्ध की विभीषिका के द्वारा दूसरे का सिंदूर, गोद या दूसरे के भाई बिछड़ जाये। इसलिए अगले वर्ष में शांति के लिए महिलाओं का बहुत भारी योगदान होगा। लेकिन अभी-अभी एक आवाज पीछे से आयी थी कि आप लोगों को बोलने की इजाजत नहीं दे रहे हैं, उसका मतलब क्या है कि क्या अभी भी हम लोगों के बीच में नहीं हैं। क्या अभी भी हमें किसी व्यक्ति का दर्जा नहीं दिया जा रहा है। मैं अपनी बात के अंत में अफीजीनिया की कहानी जरूर दोहराना चाहूंगी।

एक बार यूनान में दुर्भिक्ष पड़ा और वहां मनुयों ने कहा कि जब तक किसी सुन्दरतम कन्या का वध नहीं हो जायेगा तब तक हम दुर्भिक्ष से मुक्त नहीं हो सकते । एफीजिनिया को ढूंढा गया। वह 13 साल की बच्ची थी, जिसे जब वध स्थल ओर ले जा रहे थे तो मंत्रोच्चार के बीच में पंडित कह रहा था कि तुम्हारे आल्ट्र्स बनेंगे, पूजागृह बनेंगे क्योंकि तुम धर्म और देश के लिये अपनी कुरबानी दे रही हो लेकिन जब एफिजीनीया से अंतिम इच्छा के रूप में पूछा गया कि तुम्हें कुछ कहना हो तो कहो। पहले वह इन्कार करती है लेकिन अंतिम पादान पर पहुंचकर सहसा पलटती है और कहती है कि हां मुझे यही कहना है कि मेरे आने वाली पीढ़ियों में मेरी बहनों को व्यक्तित्व का दर्जा दिया जाये, उन्हें वस्तु न समझा जाये। मैं सोचती हूं कि यदि खदीजा बी, मरियम, अहिल्या, पांचाली, कुन्ती या सीता से यह प्रश्न पूछा जाता तो वे भी यही कहती कि हमें अपने व्यक्तित्व का दर्जा दिया जाये । हालांकि यह बहुत मुश्किल है लेकिन जो अधिकार हमें दिये गये, उसके लिये जागरूकता, उसमें आगे लाने का प्रयास इस सदन को करना होगा हमारी यह प्रतिबद्धता होगी। मैं एक शेर कहकर अपनी बात समाप्त करूंगी;

अभी तेवर कहां बदले हैं इनके , अभी भी अपना दौर है इन्कलाबी का,

अभी भी सेहरा है, तपिश बाकी है, अभी मौसम कहां गुलाब की गुलाबी का।

लेकिन उस मौसम की आमद जरूर होगी क्योंकि पुरुष प्रधान समाज ने यह भी समझ लिया है कि महिलाओं को आगे लाये बगैर,, समाज में हिस्सा दिये बगैर और उनका साथ लिये बगैर हम 21वीं सदी में नहीं जा सकते । न विकास के आयाम छू सकते हैं, न राजनीति के पादान पर चढ़ सकते हैं। इसलिये हम सब संकल्पित है कि आज महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं के विकास के साथ राट्र का विकास है। जैसा कि महात्मा गांधी जी ने कहा था। हम फिर गीता जी को श्रद्धांजलि देते हुये एक साथ मिलकर महिला विकास के लिये कृत-संकल्पित होंगे, आगे बढ़ेंगे, यही हमारा विश्वास है। जय हिन्द।

THE MINISTER OF RAILWAYS (KUMARI MAMATA BANERJEE): Sir, I am very grateful to the Chair. I am also grateful to this hon. august House and all the hon. Members. Of course, today is the International Women's Day. I congratulate all the women in this country and also all over the world and convey our best wishes. At the same time, on behalf of the Indian women, I convey our best regards to our brothers in our country and also all over the world.

I did not join politics as a woman politician. I started my political career by joining the students' movement. I do not feel that there is any discrimination between men and women. I feel that wherever we are able to work together, there only our society and our system will get developed. I feel that almost all the women Members of Parliament in this august House are from 'general' seats. But in the interest of women, I feel that the Bill seeking reservation to the extent of 33 per cent of the seats should be passed in this House unanimously because we do not want to create a division among the women. But we have to think over this matter irrespective of the caste to which we might belong to. We are united. The biggest achievement of this country today is that we are all Indians and we are together. Unity in diversity is our origin. That is why we feel that there should not be any discrimination between men and women.

At the same time, we feel today that the dropout rate among the female children is very high. The Government has

widened its scope for helping such children in their level of education up to the higher secondary level. From our side also, we do whatever is possible. We give concession to the girl child up to the 12th class so that she ccould go to school and college. At the same time, I feel that the Central Government, every State Government and all the political parties should work together to give real empowerment to the women. It should not merely be on paper but it should also be from the practical point of view.

Today, I very much remember Shrimati Geeta Mukherjee. She is not alive but she always fought for the Women's Bill.

Of course, we are happy that there are so many political parties which are headed by women, who are leading their parties and the country. So, we have developed, but we have to develop more. That is why, today, we are happy that at least after seven days, because of women the House is on and we are discussing something. We conveyed our message to the women. This is the real message to the country. This is the real privilege of women and we are proud of it.

With these words, I would like to end by saying a couplet which I always used to say. Somebody may like it or may not like it, but today when Parliament has started, let us remember the Women's Day. I give my thanks to the Chair because you helped us a lot to say a few words in the House on this Day by ending the impasse that has been going on for the last so many days. What I want to say is

मुद्दई लाख ़बुरा चाहे क्या होता है,

़वही होता है जो मंज़ूरे खुदा होता है।

Today, I very much remember Shrimati Geeta Mukherjee. She is not alive but she always fought for the Women's Bill.

Of course, we are happy that there are so many political parties which are headed by women, who are leading their parties and the country. So, we have developed, but we have to develop more. That is why, today, we are happy that at least after seven days, because of women the House is on and we are discussing something. We conveyed our message to the women. This is the real message to the country. This is the real privilege of women and we are proud of it.

With these words, I would like to end by saying a couplet which I always used to say. Somebody may like it or may not like it, but today when Parliament has started, let us remember the Women's Day. I give my thanks to the Chair because you helped us a lot to say a few words in the House on this Day by ending the impasse that has been going on for the last so many days. What I want to say is:

मुद्दई लाख ़बुरा चाहे तो क्या होता है।

़वही होता है जो मंज़ूरे-खुदा होता है।

श्रीमती रीना चौधरी (मोहनलालगंज) उपाध्यक्ष महोद्य, आज अंतर्राट्रीय महिला दि्वस के मौके पर आपने मुझे ़बोलने का अ्वसर दि्या, इसके लिए मैं आपको धन्य्वाद देती हूं और इस देश की स्भी महिला ़बहिनों को भी ़बधाई देती हूं। मैं पुरुषों को भी ़बधाई देती हूं कि आज उन्हें खुश होना चाहिए कि महिलाएं घर के काम के स्ाथ स्ाथ ़बाहर भी अपनी जिम्मेदारी को ़बखूबी नि्भा रही हैं। उनको इस ़बात का अह्सास होना चाहिए, और हम उन्से यह उम्मीद करते हैं कि ़वे हमें अपना प्र ातिद्वंद्वी नहीं ़बल्कि अपना एक अच्छा स्हयोगी स्मझकर हमारा स्ाथ देंगे और हमें आगे ़बढ़ने में स्हयोग करेंगे और उनका पूरा स्हयोग हमें मिलेगा।

जै्सा कि श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा जी ने कहा था कि अगर यहां महिलाओं की संख्या ज्यादा होगी तो इस हाउ्स की सूरत और श्क्ल दूसरी होगी और ़बहुत शांति रहेगी। इस ़बात से मैं पूरी तरह इत्तेफाक रखती हूं लेकिन आज के दिन हम ़बधाई दे रही हैं, खास ़बात भी है, लेकिन एक ़बात और गौर करने ़वाली है कि क्या महिलाओं की स्थिति जै्सी हम ़बनाना चाहते थे, ़वै्सी है या नहीं? आज भी दहेज के नाम पर महिलाओं को जला्या जाता है, आज भी महिलाओं के स्ाथ ़बलात्कार जै्सी श्र्मनाक घटनाएं होती हैं। हम अख्बार उठाकर देखें तो श्ायद रोज़ अख्बारों में इस तरह की घटनाएं छपती रहती हैं। यह हमें एक ़बात सोचने को मज़्बूर करता है कि क्या ़वास्त्व में हम महिलाओं के लिए जो स्म्मान और स्थिति चाहते थे, ़वह हुई है या नहीं। आज यह चिन्तन करने का दिन है कि हम महिलाओं को जहां पहुंचाना चाहते थे और अ्भी हमें उसमें और मेहनत करने की ज़रूरत है। इस स्ारी प्रक्रिया में हमें पुरुषों का ़बराबर स्हयोग चाहिए और आज के दिन हम उम्मीद करते हैं कि आप स्हयोग देंगे और महिलाओं की स्थिति सुधारने में हमें पूर्ण योगदान मिलेगा।

जै्सा कि माननी्य खुराना जी ने कहा कि महिला आरक्षण ि़बल पर ज़रूर ़बोलि्ये, उनको मैं निराश नहीं करना चाहती हूं। मैं ज़रूर ़बोलूंगी, लेकिन स्ाथ ही यह कहना चाहती हूं कि आरक्षण महिलाओं की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति को मज़्बूत ़बनाने के लिए कर रहे हैं. इसलिए गां्वों में रहने ़वाली महिलाओं की राजनैतिक और आर्थिक स्थिति श्हर में रहने ़वाली महिलाओं से ज्यादा ़बदतर है। अगर ़वास्त्व में हम महिलाओं की राजनैतिक और आर्थिक स्थिति मज़्बूत करना चाहते हैं तो हमें ग्रामीण महिलाओं की तरफ ज्यादा ध्यान देना होगा और उनकी स्थिति को सुदृढ़ ़बनाना होगा। माननी्य रेल मंत्री, कुमारी ममता ़बनर्जी जी ने कहा कि महिलाओं को अलग-अलग जाति्यों में ़बाँटने की ज़रूरत नहीं है, लेकन मैं ममता जी से कहना चाहूँगी कि यह कटु सत्य है कि महिलाएं भी आज जाति और ़वर्गों में ़बँटी हुई हैं।

अगर मेरी पहचान है तो एक दलित महिला के रूप में मेरी पहचान है। इसलिए इस सचाई को हम नकार नहीं सकते कि महिलाओं की कोई जाति या धर्म नहीं होता है। आज महिलाएं भी अपनी जाति से पहचानी जाती हैं कि कौन ब्राह्मण है, कौन दलित है, कौन पिछ्ड़े ़वर्ग से है। इसलिए इस सच्चाई को स्वीकार करते हुए अगर ़वास्त्व में आप महिलाओं के उत्थान के लिए चिंतित हैं तो महिला आरक्षण ि़बल में समाज की स्भी ़वर्गों की महिलाओं को आरक्षण दीजिए और उनकी स्थिति को मज़्बूत ़बनाइ्ये। आज के दिन मैं ि़बहार में रा़बड़ी देवी â€¦(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : यह यहां मत लाइये, यह यहां मत रखिये। **â€¦(व्यवधान)**

...(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Order please.

...(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Pradhan, please do not disturb.

...(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please do not interrupt.

...(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Order please.

...(*Interruptions*)

श्रीमती रीना चौधरी : वह भी एक महिला हैं, आप यह याद रखिये कि वह भी एक महिला हैं, यह भूल जाइये कि वह लालू जी की श्रीमती जी हैं। एक महिला मुख्य मंत्री बन रही थी **â€¦(व्यवधान)**

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Sir, we are not getting the translation.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Is there no translation? It is there.

SHRI P.H. PANDIYAN (TIRUNELVELI): There is no translation.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I am getting it checked please.

श्रीमती रीना चौधरी : अंत में, मैं इतना ही कहना चाहती हूं कि महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ बनाने में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की स्वयं की भागीदारी भी बहुत जरूरी है। इसलिए पुरुष जो हमारा सहयोग करेंगे, उनके साथ-साथ महिलाएं भी महिलाओं का सहयोग करने के लिए आत्ममंथन और आत्मचिंतन करें। इन्हीं शब्दों के साथ-साथ आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

DR. (SHRIMATI) BEATRIX D'SOUZA (NOMINATED): Mr. Deputy-Speaker, Sir, it is a good omen that the Lok Sabha has started working again today on the International Women's Day. I join the other Woman Members of the House in greeting our women all over India. I also ask that the Women's Reservation Bill be passed, if possible, in this Session. While asking for women's rights, I feel that women cannot demand what is constitutionally not given to them. Therefore, we cannot ask that a former Chief Minister is asked to form the Government only because she is a woman. This will be a negation of women's rights. We cannot ask for rights that will take away the rights which the men legitimately deserve in this particular connection. Since the Common Civil Code is only a dream in India, I would request that the Christian Personal Law Bills which are pending be passed. Some laws are more than one century old. Certain laws regarding marriage, divorce, inheritance and adoption − all these laws discriminate against women. I request that new legislative Bills be introduced in Parliament in this Session. I also request that the Codification of Muslim Law be introduced to benefit the Muslim women.

Finally, the Government has made a commitment to the empowerment of the girl child. I feel that if the girl child is empowered, the country would be moving in the right direction, in the 21st century. Thank you.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF WATER RESOURCES (SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY): Sir, I am grateful to you for giving me this chance to speak here. Sir, through you, I congratulate the entire women folk of the country and the world. Sir, I am standing here not to speak for the right of the women but seeing the reaction of the entire men folk, the hon. Members of Parliament who are sitting here, I feel that each and everyone is ready to extend their hand in support of the cause of the women. Sir, through you, I congratulate them.

Secondly, it is heard that half of the world's population comprises of women. Sir, if half of the population of the world cannot march forward with men, then we cannot call the world a proper place to live. So, I feel that the House will be agreeing with me if I say that they will support the cause of the women, especially, the Women's Reservation Bill which is the urgent necessity for the country.

This is our country. We have a great tradition. We have got great women. To name, there are a few like Maitry, Gargi, Ahilya and Jhansi Ki Rani, etc. All these ladies had made their mark in different fields. As such, there is no doubt at all that women can really make a mark when they are given proper opportunities.

Sir, I feel that the hon. Members present here are ready to support the Bill. For our Party, the BJP, I think, we have got the largest women Members, nearly 20 Members.

I belong to the North-East. In that part, women are respected just like a Goddess. There is no killing of girls, there is no dowry death in that part and women are honoured like anything.

So, I feel and I request the hon. Members in the House that these conditions should be created in each and every part of the country so that we can really say that women have got great positions in this great traditional country.

I want to assert one point also here. I hope that in this new millennium women will surely get very good position and they will get very good chance to march forward. The sky should be the limit for their advancement.

So, again, I request through you, Sir, that each Member in this House belonging to different political parties will surely support the Constitution (Amendment) Bill providing 33 per cent reservation for women in Parliament and State Assemblies.

Sir, with these few words, I conclude my speech.

विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती जयवन्ती मेहता) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, नई सहस्त्राब्दी के अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का यह पहला वर्ष है। इस शुभ अवसर पर मैं विश्व की सभी नारियों और पूरे विश्व को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं। भारतवर्ष विश्व का सबसे बड़ा लोक तंत्र रहा है और इस लोक तंत्र में हम आरक्षण के लिये हम विचार कर रहे हैं, महिला आरक्षण विधेयक हमारी सरकार ने प्रस्तुत किया है, उसे सर्वसम्मति से पारित करें। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस एक पर्व है और इस तरह के पर्व पर मैं अपनी बहनों को बताना चाहती हूं कि उन्होंने जो यहां पर अपने विचार प्रकट किए हैं, उनमें मैं भी अपने को जोड़ना चाहती हूं कि महिलाओं की अब तो जात होती है चाहे पिछड़ी जाति की महिलाएं हों, शिक्षित महिलाएं हों, गरीब महिलाएं हों और चाहे किसी भी प्रैन्त से आई हुई महिलाएं हों, सब की जाति एक ही है और उसका नाम है वह महिला जाति।

SHRI S.S. PALANIMANICKAM (THANJAVUR): Sir, there is no translation facility.

MR. DEPUTY-SPEAKER: It is there.

SEVERAL HON. MEMEBRS: No, Sir.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please bear with me. I am making arrangements.

...(*Interruptions*)

श्रीमती जयवन्ती मेहता : महिलाओं की जाति में कोई फर्क नहीं है। इसलिए महिलाओं को जाति-पांति के आधार पर बांटने की आवश्यकता नहीं है। न उन्हें धर्म के ऊपर बांटा जा सकता है और न जाति के आधार पर। वे सब की सब एक ही हैं। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मैं अपने भाइयों से अपील करना चाहूंगी कि वे महिलाओं को बांटने का प्रयास न करें।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहूंगी कि हमारी यह परम्परा रही है चाहे आप अच्छे प्रशासक के रूप में देखें चाहे किसी भी क्षेत्र में देखें महिलाएं सदैव आगे रही हैं। यदि हम अच्छे प्रशासक के रूप में देखें तो अहिल्याबाई होलकर सर्वोच्च स्थान पर आती हैं। इसी प्रकार रजिया बेगम का नाम भी है और उच्च गुणों की दृष्टि से मातृत्व सम्हाले हुए देखते हैं, तो झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई का नाम याद अैंता है जिन्होंने अपने छैंटे बच्चे को अपनी पीठ पर बांध कर रणभूमि में जाना स्वीकार किया और कहा कि मैं अपनी झांसी किसी को नहीं दूंगी। हमारे देश में महारानी पद्मिनीबाई जैसी महिलाएं भी हुई हैं, जिन्होंने अपने आप को अग्नि में झोंक कर जौहर किया लेकिन दुश्मन को बुरी दृष्टि नहीं डालने दी।

यही नहीं हमारे यहां ऐसी भी महिलायें रही हैं।**â€¦(व्यवधान)**

SOME HON. MEMBERS: There is no translation, Sir.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now it has started. Is it not coming?

AN HON. MEMBER: Now only it has come, Sir.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Then please do not interrupt now and then.

स्रीमती जयवन्ती मेहता : **जो पन्ना दासी के रूप में जानी जाती थी। जिन्होंने अपने स्वयं के पुत्र का बलिदान देकर राजा के पुत्र को बचाने का काम किया। त्याग और समर्पण की मूर्ति के रूप में नारी शक्तिने हमेशा अपना योगदान दिया है।**

भारत की हर प्रकार की समस्याओं की तरफ जब हम देखते हैं चाहे वह दहेज का दानव हो, चाहे अत्याचार-अन्याय का हो, चाहे भ्रूण हत्या की बैंत हो, यदि इन सारे सवालों का जवाब हमें चाहिए तो महिलाओं और पुरुषों दोनों को साथ मिलकर इन समस्याओं को दूर करने का प्रयास करना होगा।

इसीलिए इस सत्र में हम यह आग्रह करेंगे कि महिला आरक्षण विधेयक को हम पास करें।

आज के इस अवसर पर मैं गीता दीदी को कभी नहीं भूल सकती क्योंकि गीता दीदी हमारी इस महिला आरक्षण कमेटी की सदस्य रहीं और उन्होंने अपने आग्रहपूर्ण तरीके से इस बैंत को रखा। इसलिए मैं चाहती हूं कि हमारी बहन गीता जी की अैंत्मा की शांति की दृष्टि से भी हम

सब सोचें और इस बिल को तुरंत पारित करें। यहां जो लोग आज महिलाओं की दृटि से विचार करते हैं, मैं उनको एक शेर के माध्यम से कुछ संदेश देकर अपने वक्तव्य को पूरा करना चाहूंगी। मेरे शेर की पक्तियां हैं -

"अबला नहीं कहा जा सकता अब भारत की नारी को,

राख समझना भूल बहुत छुपी हुई चिंगारी को। "

श्रीमती कैलाशो देवी(कुरूक्षेत्र) : उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं अंतर्राट्रीय महिला दिवस पर सदन के माध्यम से आप सबको तहेदिल से बधाई देना चाहती हूं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि महिलाओं के अंदर अदभूत शक्ति और अदम्य क्षमता छुपी हुई है। जब-जब भी महिलाओं ने अपने अंदर छुपी हुई इस अदम्य क्षमता को पहचाना है तब-तब पन्ना धाय अभूतपूर्व त्याग और साहस की प्रतिमूर्ति के रूप में विख्यात हो गयी। दुर्गा, अहिल्या, लक्ष्मीबाई कुशल रण्योधा के रूप में विख्यात हो गईं। सीता, सावित्री अभूतपूर्व पतिव्रत धर्म के क्षेत्र में और रजिया सुल्ताना कुशल प्रशासक के रूप में विख्यात हुईं। लेकिन इस प्रकार की महिलाओं का आगमन हमारे समाज में ऐसा रहा है जैसे कभी-कभी आकाश में कोई उल्का या धूमकेतु जाता है। आमतौर पर आम नारी इस प्रकार के अवसरों से वंचित रही हैं क्योंकि सदियों से पुरुष प्रधान समाज ने उसे दोयम दर्जे की नारी समझा है। कभी भी उसे समाज में बराबरी का मान-सम्मान और बराबरी का दर्जा नहीं दिया गया। लेकिन मैं इस सदन के माध्यम से अपने देश की इस आधी आबादी को, अपनी बहनों को बता देना चाहती हूं कि अधिकार और हक कभी भी मांगने से नहीं मिलते। मान-सम्मान कोई किसी को सोने की तश्तरी में पेश नहीं करता, उसके लिए उसे संर्घा करना पड़ता है, लड़ाई लड़नी पड़ती है। यदि हमने संर्घा न किया होता तो अंग्रेज भारत को छोडकर कभी नहीं जाता। यदि हमारे शहीद लाखों कुर्बानियां न देते, संर्घा न करते तो 800 वर्ा पुरानी मुगल सल्तनत को उखाड़कर फेंक न दिया गया होता। इसलिए हमारी बहनों को अपने अधिकारों को हासिल करने के लिए संर्घा करना होगा। उन्हें सबल बनना होगा क्योंकि भगवान भी उसी की मदद करते हैं जो स्वयं अपनी मदद करता है और फिर डारविन का सिद्धांत भी है कि कमजोर के लिए इस पृथ्वी पर कोई जगह नहीं है। ताकतवर उसे निगलकर नट कर डालता है। इसलिए महिलाओं को सबल बनाने के लिए हरेक क्षेत्र में बराबरी की भागीदारी मांगने से नहीं बल्कि हासिल करके लेनी होगी। यदि महिलाओं को राजनीति में भागीदारी दे दी जाये, यानी 33 प्रतिशत आरक्षण दे दिया जाये तो दूसरे क्षेत्रों में उनकी भागीदारी अपने आप बन जायेगी और फिर कुछ वर्ाों से जिला पंचायतों में, नगर परिदों में, पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं को जो 33 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है, उसके सुखद परिणाम सामने आये हैं।

गीदारी दे दी जाये, यानी 33 प्रतिशत आरक्षण दे दिया जाये तो दूसरे क्षेत्रों में उनकी भागीदारी अपने आप बन जायेगी और फिर कुछ वर्ाों से जिला पंचायतों में, नगर परिदों में, पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं को जो 33 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है, उसके सुखद परिणाम सामने आये हैं।

परिस्थितियां धीरे-धीरे बदल रही हैं। इसलिए महिलाओं को संसद और विधान सभाओं में, जहां सत्ता वास्तव में निहित है, जहां से महिलाएं अपने हितों के लिए कानून बना सकती हैं, 33 प्रतिशत आरक्षण दिया जाना बेहद जरूरी है। जब-जब महिलाओं को अवसर दिया गया है, महिलाओं ने इसे साबित किया है। प्रशासनिक क्षमता में वे पुरुषों से कई कदम आगे निकल गई हैं। श्रीमती श्रीमाओ भंडारनायके, श्रीमती चंद्रिका कुमारतुंगे, बंगलादेश की श्रीमती खालिदा जिया बेगम, पाकिस्तान की श्रीमती बेनजीर भुट्टो और मार्ग्रेट थैचर, हमारे देश की श्रीमती इंदिरा गांधी ने सत्रह वर्ा तक सफलतापूर्वक राज किया। लेकिन मैं यह भी बता देना चाहती हूं कि इस प्रकार की महिलाओ को राजनीति अपने संर्घा के बलबूते पर नहीं बल्कि पारिवारिक विरासत के रूप में मिली थी। यदि हमें राजनीति में आम महिला की भागीदारी बढ़ानी है तो 33 प्रतिशत आरक्षण करना पड़ेगा। मेरी सभी सांसद भाइयों और बहनों से यह अपील है कि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इस बिल का समर्थन करें और इसे केवल प्रस्तुत ही नहीं पास करने में अपनी मदद करें ताकि महिलाएं कंधे से कंधा मिलाकर भारत को इक्कीसवीं सदी में विश्व के मंच पर ले जाएं। मेरे समस्त सांसद भाइयों की अंतर्रात्मा भी इस बात की गवाही दे रही है कि महिलाओं को राजनीति में बराबर की भागीदारी दिए बिना भारत प्रगति नहीं कर सकता। मेरी महिला बहनें यह आवाज दे रही हैं कि -

बंद होठों का था सबब कोई

वक्त आ गया है, हम भी बोलेंगे।

श्रीमती फूलन देवी (मिर्जापुर) : उपाध्यक्ष महोदय, आज महिला दिवस है। मैं महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं के लिए कुछ कहना चाहूंगी। महिला दयामयी, करूणामयी होती है। महिला जननी होती है। महिल मां, देवी, दुर्गा है। लेकिन बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि हमारी बहनें कह रहीं हैं कि महिलाओं को जाति के हिसाब से न बांटा जाए। क्यों न बांटा जाए? पुरुषों ने अपनी सुख-सुविधा के हिसाब से कह दिया कि महिला की कोई जाति नहीं होती। यदि पुरुष चाहे तो किसी भी जाति की महिला से शादी कर सकता है। पुरुष की इच्छा हुई तो महिला को काट दिया जाता है, नंगा करके नचा दिया जाता है, जला दिया जाता है, कुलटा, कलंकिनी कहा जाता है। मैं कहना चाहती हूं कि यदि महिलाओं को इज्जत और सम्मान देना है, इस देश में एक अरब लोग हैं जिनमें से पचास करोड़ महिलाएं हैं, 33 प्रतिशत आरक्षण देने से क्या होगा, हम कहते हैं कि पचास प्रतिशत दें। लेकिन शैड्यूल्ड कास्ट्स, शैड्यूल्ड ट्राईब्स की महिलाओं का बहुत शोाण होता है, घूंघट के अंदर उन पर बहुत जुल्म होते हैं जिन्हें वे सहन करती हैं। उनको यह पता नहीं है कि हमारे क्या अधिकार हैं। यदि वे घूंघट उठाकर चलेंगी तो उन्हें कुलटा, कलंकिनी और पता नहीं क्या-क्या आरोप दिए जाते हैं। आज महिला दिवस के उपलक्ष्य में मैं मांग करती हूं कि नौकरी और राजनीति में महिलाओं को पचास प्रतिशत भागीदारी, जाति के हिसाब से, जैसे शैड्यूल्ड कास्ट्स, शैड्यूल्ड ट्राइब्स, अल्पसंख्यक और पिछड़ी जाति, हम जैसी दबी-पिसी महिलाएं जिन्होंने स्वयं शोाण झेलकर देखा है, सहन करके देखा है, दें। मेरी बहनो मैं क्या बताऊं, हमारी महिलाएं भी महिलाओं पर चिल्लाने लगती हैं कि फलानी महिला ऐसी है, फलानी महिला ऐसी है। मैंने करीब से देखा है, मैं जानती हूं कि महिलाओं के साथ गांवों में किस तरह का अन्याय और अत्याचार होता है। मैं थाने गई, थाने में हमारे साथ क्या-क्या नहीं हुआ। हमारी महिलाएं थाने नहीं जा सकतीं। महिलाओं को थाने में भी खाने की वस्तु समझा जाता है। जिसके ऊपर कोई छत्रछाया नहीं होती, उसके साथ गांवों में बहुत शोाण होता है। पुलिस प्रशासन भी शोाण करता है। उसका साथ कानून भी नहीं देता। इसलिए महिलाओं की सुरक्षा के लिए आप पचास प्रतिशत की भागीदारी दें। मैं सभी सदस्यों से भी मांग करती हूं कि महिलाओं को जाति के हिसाब से भागीदारी दें, किसी के दबाव में आकर नहीं।

...(व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना : आपने मुलायम सिंह जी से पूछ लिया है ?

श्रीमती फूलन देवी : मदन लाल खुराना जी, आपको पता नहीं है। आप दिल्ली को ही मत देखो, पूरे देश को देखो। देश में बेचारी ऐसी-ऐसी महिलाएं हैं, जिन्हें आपने बांटकर रखा है, इसलिए उन्हें जाति के हिसाब से आरक्षण दो। अगर महिलाओं की कोई जाति नहीं है तो उनके साथ रोटी-बेटी का रिश्ता रखना शुरू कर दो। राबड़ी देवी एक महिला है, उसको आपने मुख्य मंत्री नहीं बनने दिया। मैं आज महिला दिवस के उपलक्ष में मांग करती हूं कि राबड़ी देवी को दोबारा मुख्य मंत्री बनने का अवसर दिया जाये। आप महिलाओं की बात करते हैं, क्या कुसुम राय महिला नहीं थी, वह महिला आयोग की चेयरमैन थी, उसको आपने हटा दिया, आपने महिला आयोग भंग कर दिया, आप महिलाओं की बात करते हो, दिखावा करते हो, ऐसा नहीं चलेगा। अगर आरक्षण देना है तो ईमानदारी से दो, दिल खोलकर दो और नहीं देना है तो मना कर दो कि हम नहीं देंगे। आप महिलाओं को क्यों गुमराह करते हो। मैं मांग करती हूं...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप जल्दी समाप्त कीजिए।

श्रीमती फूलन देवी : मैं महिला दिवस के उपलक्ष में मांग करती हूं कि राबड़ी देवी को मुख्य मंत्री बनाया जाये।

MR. DEPUTY-SPEAKER: There is a lot of noise in the House. Please hear her.

श्रीमती भावनाबेन देवराजभाई चीखलीया (जूनागढ) : मैं बिल्कुल दो मिनट में अपनी बात खत्म कर दूंगी, क्योंकि हमारी बहनें बहुत बातें कह चुकी हैं।

सबसे पहले तो आपने हम लोगों को हाउस में अपनी बात कहने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपकी आभारी हूं।

5000 साल पुरानी हमारी भारतीय संस्कृति है, उसमें हम हमेशा दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी जी के रूप में महिला की पूजा करते आये हैं। आज अन्तर्राट्रीय महिला दिवस पर मैं हमारी भारत की सभी महिलाओं की ओर से गौरव महसूस कर रही हूं कि हम इसे त्यौहार के रूप में आज मना रहे हैं। मैं अपनी बात संसद के माध्यम से कहना चाहती हूं कि 33 प्रतिशत महिलाओं को आरक्षण देने का बिल यहां है, जब इतनी संख्या में हमारे एम.पी. भाई लोग यहां हैं तो मैं उनसे कहना चाहूंगी कि यह बिल बिना किसी चर्चा के पारित करना जरूरी है। इसे पारित करना चाहिए, यह मेरी मांग है।

दूसरी बात यह कि हमारे यहां भारत को माता कहते हैं। पूरे विश्व में कोई एक भी ऐसा देश नहींहै, जो अपनी मातृभूमि को माता कहता हो, ऐसी हमारी संस्कृति है। मैं आज के इस शुभ अवसर पर संसद को भारत की महिलाओं की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं। आज के दिन हम चाहते हैं कि 33 प्रतिशत आरक्षण के महिलाओं का बिल हमें पारित करना चाहिए, क्योंकि सत्ता में महिलाओंकी भागीदारी होना जरूरी है। स्थानीय स्वराज की संस्थाओं में हम लोगों ने यह अनुभव कर लिया है कि महिलाएं राजनीति में भी सक्षम हो सकती हैं और काम करने में, सत्ता में भागीदारी में भी हो सकती हैं तो यह 33 प्रतिशत आरक्षण बिल यूनानिम्सली हमें पास करना चाहिए, यह मेरी मांग है। धन्यवाद।

श्रीमती जयाबेन बी. ठक्कर (वडोदरा) : उपाध्यक्ष महोदय, आपने आज महिला दिवस के उपलक्ष में महिलाओं के आरक्षण के बारे में विचार प्रस्तुत करे के लिए जो मुझे अवसर दिया है, उसके आधार पर हमारे गुजरात में यह कहा जाता है, 'जे कर झुलावे पारणो, इस जगह पर शासन करे' मतलब जो हाथ पालना झुला सकते हैं, वे हाथ जगत पर शासन भी कर सकते हैं। पूरे विश्व पर शासन करने की बात जब कही जाती है तो उतना विश्वास महिला शक्ति में, दुर्गा शक्ति में, सरस्वती की शक्ति में गुजरात में पहले ही रख दिया था। उसके आधार पर जब मैं एक बात सदन में कहने जा रही हूं तो इस राट्र को हमारी जो चला रही है, उसकी गरिमा को साथ में रखते हुए मैं यह कहना चाहूंगी कि समाज की सुरक्षा के लिए और उसकी सारी संरचना को मद्देनजर रखते हुए समाज रूपी रथ को स्त्री और पुरुा चला रहे हैं। ये समाज के दो पहिये हैं, जो इस रथ को अच्छी तरह से चला रहे हैं और गति प्रदान कर रहे हैं।

उस गति में प्रगति लानी है। स्त्री शक्ति समाज की धुरा को भी अच्छी तरह से सम्भालने जा रही है। उसमें पूरे समाज की व्यवथा को सम्भालने की शक्ति है। इसलिए उसकी मर्यादाओं को ध्यान में रखकर आरक्षण दिया जाए। जब आरक्षण की बात आती है तो मैं यहां एक बात यह भी कहना चाहूंगी कि बिन मांगे मोती मिले--मांगे मिले न भीख। संसद और विधान सभाओं में हम स्त्री शक्ति का योगदान देख रहे हैं, वे मोती उनको मिल चुके हैं। उनमें जो जान है, वह उसने अपनी प्रामाणिकता से, अपनी कर्त्तव्यनिठा से और कर्मठता से भर दी है। समाज की धुरा को सम्भालने में उसका शत-प्रतिशत का योगदान है। इसलिए आज अंतरराट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं की गरिमा को, कर्त्तव्यनिठा को समझते हुए आप सब रथ के सारथी और महारथी इस बात का समर्थन करेंगे।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, Papers to be laid.

...(*Interruptions*)

1507 बजे

(इस समय श्री सुकदेव पासवान तथा कुछ अन्य माननीय सदस्य सभा पटल के निकट फर्श पर

खड़े हो गए)

–